पोवारी

ॐ

ज य

सि या रा म

भा षा पो वा री

सं स्कृ त ज न नी

दे व ना ग री लि पी

क ख ग घ च छ द न प

मा य बो ली ह म री पो वा री

छ त्ती स कु ली न पो वा र पं वा र

ऋषि बिसेन

पोवारी

(कविता संग्रह पोवारी भाषा मा)

ऋषि बिसेन

पोवारी

(कविता संग्रह पोवारी भाषा मा)

लेखक और मुखपृष्ठ

श्री ऋषि बिसेन

प्रभुत्तम नगर, बालाघाट

जिला : (मध्यप्रदेश) बालाघाट ४८१००१

७९७४७७१५९७

सर्वाधिकार और प्रकाशक

श्रीमती बिंदु बिसेन, बालाघाट

जिला (मध्यप्रदेश) बालाघाट :, ४८१००१

प्रथमावृत्ति

06/12/2023

ISBN

978-93-6038-997-0

आमुख

पोवारी, यव किताब पोवारी भाषा को परिचय देवन को संग मा पोवारी भाषा जतन, सनातनी पोवारी संस्कृति अना समाजोत्थान लाई शब्द रुपमा मोरो हिरदा को भाव आती। छत्तीस कविता इनको संग्रह, छत्तीस कुरया पंवार समाज को संस्कार अना संस्कृति को समन्वय से। पोवारी, नाव की यन किताब को शीर्षक पोवार(पंवार) समाज की आपरी मातृभाषा(मायबोली) को नाव आय।

पोवारी नाव राखन को उद्देश्य समाज की आपरी पुरातन धरोहर अना पुरखा इनकी भाषा को प्रति सबको हिरदय मा पिरम अना स्वाभिमान को भाव जगावनो से, काहे की समाज आता आपरी यन विरासत को प्रति जरसो उदासीन भय गई से अखिन भाषा को संग आपरी संस्कृति ला भी बिसर रहया सेती। पोवारी का साहित्यकार इनना आपरी शुभेच्छा मा मोरो मन को भाव ला साथ देयकन येला सम्बल देइसेन की आपरी भाषा अना संस्कृति ला बचावन को काम करतो रवहनो से।

मी ईश्वर, माता-पिता, परिवारजन, समाजजन को संग पोवारी संस्कृति अना भाषा का ध्वजवाहक, पोवारी साहित्यकार इनला पुरो मनोयोग लक धन्यवाद देउसू की सबझन प्रत्यक्ष अना अप्रत्यक्ष रूप लकअ मोरो साथ मा सेती।

तुमरो

.......ऋषि बिसेन, बालाघाट

पोवारी भाषा को परिचय

छत्तीस कुर को पोवार(पंवार) समाज की आपरी विशिष्ट बोली अना संस्कृति से। पोवारी बोली अना पोवारी संस्कृति को मूल रूप ला पंवार/ पोवार समाज न आपरो पुरखा गिन को मूल क्षेत्र मालवा राजपुताना ला धरकन आनी सेती। पोवार समाज को भाट गिनना आपरी पोथी मा यव तथ्य दर्ज करि सेत की ३६ कुर का यव क्षत्रिय मालवा राजपुताना को अलग अलग क्षेत्र लक् आयकन नगरधन मा सबलक पहिले बसी होतीन।या तथ्य ब्रिटिश गैज़ेटिएर, जनगणना को दस्तावेज अना इतिहास की किताब इनमा स्पष्ट रूप लक मिल जासे। १७०० लक १७७५ वरि पोवारी बोलनवारा यव समाज वैनगंगा क्षेत्र मा स्थायी रूप ला बस गया होता।

१३१० मा मालवा को परमार वंश को राजवंश को खात्मा को बाद वोनो क्षेत्र मा मुस्लिम आक्रांता गिन को शासन स्थापित भय गया होतो। आमरो पुरखा गिनना आपरी पहचान कभी नहीं खोयीन अना वय इन दुश्मन गिनलक आपरो बदला लेवन ला सदैव तत्पर रहवत होतीन। नगरधन आवन को पहिले भी आमरो पुरखा मालवा लक बुंदेलखंड वरी विस्थापित भया। भाषाविद कसेती की पोवारी भाषा मा राजस्थानी, मालवी अना बघेली को प्रभाव दिससे जेन येनो तथ्य ला समर्थन देसे कई विदर्भ मा आवन को पहिले ३६ कुल का यव क्षत्रिय मुग़ल इनको विरुद्ध बुंदेला राजा इनकी मदद लाइ समूह मा उत्तर को कन विस्थापित भया अना तसच १७०० को आसपास बुलंदबख्त को आग्रह परा नगरधन नागपुर को आसपास बसीन।

रसेल न आपरी किताब मा यव उल्लेखित करि सेस कई कसो ३६ कुर का क्षत्रिय मालवा लक वैनगंगा क्षेत्र मा आयकन बसीन। विदर्भ क्षेत्र मा आवन को बाद पोवारी बोली परा स्थानीय मराठी झाड़ी बोली को प्रभाव अज् स्पष्ट रूप लक् चोवोसे। फिर भी पोवारी बोली को आपरो स्वतंत्र अस्तित्व से। १८९१ कई जनगणना मा बालाघाट, भंडारा अना सिवनी जिल्हा मा पोवार समाज कई संख्या होती। पहिले यव समाज पोवारी बोली मा च बोलत होतीन अना समाज कई संख्या बढ़न को साथ पोवारी बोलन वालो भी बढ़ता गया ।

सेंट्रल प्रोविसेंसेस सेन्सस, १८७२ को अनुसार मालवा का प्रमार नगरधन(रामटेक जवर) मा आयकन् बसी होतीन। पोवार गिनको हाथ लकअ नगरधन मा यक किला बनावन को भी यन जनगणना को दस्तावेज मा उल्लेख से। यन् जनगणना मा भंडारा जिला मा ४५,४०९, सिवनी जिला मा ३०,३०५ अना बालाघाट जिला मा १३,९०६ पोवार समाज की जनसँख्या होती। रिपोर्ट्स ऑफ़ एथनोलॉजिकल कमिटी, नागपुर, १८६८ मा भी औरगजेब को बेरा मा मालवा को पँवार राजपूत गिनको नगरधन आयकन बसन को उल्लेख मिलसे।

आयरिश अधिकारी अना भाषाविद श्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन को नेतृत्व मा १९०४ मा देश व्यापी भाषायी सर्वेक्षण को कार्य होयो होतो। लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया, नाव की आपरी रिपोर्ट को पृष्ठ क्रमांक १७७-१७९ मा श्री ग्रियर्सन महोदय को द्वारा पोवारी बोली को विषय मा लिखी गयी से। उनना यन रिपोर्ट मा या तथ्य का उल्लेख करि सेत की पोवार, मुलत: मालवा का राजपूत प्रमार सेती जेनकि भाषा पोवारी से।

१८९१ की जनगणना मा वैनगंगा क्षेत्र को बालाघाट, भंडारा(आज को गोंदिया शामिल) अना सिवनी जिला मा पोवार(पंवार) समाज की जनसँख्या १,१३,६०४/- होतिन अना वय पोवारी बोलत होता। श्री ग्रियर्सन महोदय ना येनो तथ्य को उल्लेख करिसेत की पश्चिम राजपुताना लक् आवन को बाद पोवारी भाषा परा बघेली अना मराठी को प्रभाव देखनो मा आयी से। आयरिश महोदय ना आपरी रिपोर्ट मा बालाघाट अना भंडारा जिला की पोवारी को तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करि सेत।

सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, भंडारा जिला मा यव तथ्य उल्लेखित से की पोवारों की बोली पोवारी से अना यव बोली ला पोवार समाज ना आपरो मूल स्थान, पश्चिमी राजपुताना लक धरकन आनी होतिन। कैटेलॉग ऑफ़ लैंग्वेज एंड फैमिलीज़: ग्लूटोलॉग & जॉर्ज अ. ग्रियर्सन, १९०४ मा यव तथ्य उल्लेखित से की पोवारी, इंडो आर्यन सेंट्रल ज़ोन की उपभाषा, ईस्टर्न हिंदी की उपभाषा से। बोली भाषा को अध्ययन करन वाली संस्था मल्टी ट्री, मा पोवारी बोली को कोड pwr , कोड स्तब्दार्ड : ISO ६३९-३,

इंडो-यूरोपियन फॅमिली देयन मा आयी से। तसच Ethnologue : The language OF world मा पोवारी बोली ला वैनगंगा पोवारी [(Vyneganga Powari) (pwr - vyn) ला अभिलेखित करी गयी सेती। OLAC रिकॉर्ड मा पोवारी बोली ला pwrकोड लक् आपरो रिकॉर्ड मा शामिल करी सेती।

आजादी को बाद का प्रथम जनगणना दस्तावेज Language Handbook: Chhindwara, Betul, Hoshangabad, Nimar and Balaghat Districts, 1956 मा बालाघाट जिला मा पंवारसमाज की (पोवार) बोली पोवारी को उल्लेख से। तसचLanguage Handbook : Nagpur, Chanda, Bhandara and Amrawati Districts मा भंडारा जिला मा पोवारी नाव लक पोवारसम (पंवार)ाज की बोली को उल्लेख से। सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट, गज़ेटियर्स, बालाघाट डिस्ट्रिक्टको पृष्ठ (१९०१-१८९१) क्रमांक १३ मा पोवार समाज की बोली पोवारी अना पोवारी बोलन वालो की संख्या ४१,०४५दर्शायी गयी से। -/ १८८१ की जनगणना मा सेंट्रल प्रॉविन्सेस प्रान्त मा पोवारी भाषी पोवार समाज की कुल जनसँख्या १,०६,०८१ होती जो मुख्य रूप लक भंडारा)बालाघाट अना गोंदिया शामिलअना सिवनी जिलों (मा निवासरत होतिन।

भारत की जनगणना, १८९१ मा यव तथ्य उल्लेखित से की पोवारी, हिंदी परिवार की बोली आय। कई बोली जसो भोयरी, गोवारी, कटियाई, गोवारी, आदि बोली इनको नाव उनला बोलन जाति विशेष के नाव परा आधारित आय। यन पृष्ठ पर आगे लिखी गई से की या जाति स्थाई निवासी इनको संपर्क मा आइन अना ओन परा स्थानीय भाषा इनको प्रभाव पड़ी से। जसो भंडारा जिला की पोवारी। सेंट्रल प्रॉविन्सेस एथनोलॉजिकल कमिटी, १८६६६७- की रिपोर्ट को पृष्ठ क्रमांक ५१ मा यव लिखी से की पोवारी भाषा, पोवार इनकी भाषा आय अना ओको परा स्थानीय भाषा जसो मराठी अना गोंडी भाषा इनका शब्द भी एकोमा समाहित भय गया सेती। लम्बो समय वरि विभिन्न भाषी समूह इनको संगमा रहन को कारन उनमा कई शब्द इनको लेन देन एक-स्वाभाविक प्रकिया से। पोवार समाज को विदर्भ मा आयकन बसन को बाद मा इतन की स्थानीय भाषा इनको प्रभाव को कारन

यव भाषा आपरो पूर्ववर्ती क्षेत्र इनकी भाषा जसो निमाड़ी, मालवी अना गुजराती जसो होयकन भी एक अलग रुपमा स्वतंत्र भाषा बन गई से जो बालाघाट, गोंदिया, भंडारा अना सिवनी जिलों मा स्थाई रूप लक निवास करन वालो पोवार समुदाय की ही भाषा आय।[1]

भारत की जनगणना १९०१ [2] मा केंद्र प्रान्त मा पोवारी भाषा ला हिंदी समूह को बघेली की उपबोली लिखी होतिन। यन जनगणना मा १,२१,८४४ लोख इनना पोवारी ला आपरी मातृभाषा सांगी होतिन। १९११ की जनगणना मा यव संख्या बढ़कन १,४३,००३ भय गई। बालाघाट, सिवनी अना भंडारा ज़िला मा पोवारी भाषी लोख होतिन। सेंट्रल प्रॉविन्सेस डिस्ट्रिक्ट ग़ज़ीटियर्स , वॉल्यूम ३, पार्ट २, १९२७ को पृष्ठ क्रमांक १४, मा यव लिखिसे की पोवारी, पोवार इनकी उपबोली आय।

एक्सेशन लिस्ट, इंडिया, वॉल्यूम १८, १९८० किताब को पृष्ठ क्रमांक ४०३ मा पोवारी भाषा को विषय विवरण देइ गई से। विवरण मा असो लिखान से की पोवारी भाषा राजस्थानी, बघेली अना मराठी भाषा इनको मिश्रण आय, जो महाराष्ट्र राज्य को भंडारा जिला मा अना मध्यप्रदेश राज्य को बालाघाट जिला मा बोली जासे। हालाँकि यन विवरण मा सिवनी जिला जेको अस्तित्व होतो, मा निवासरत पोवार समाज जन द्वारा भी पोवारी बोली जासे, नहीं आई से। सन १९९९ मा भंडारा जिला लक गोंदिया जिला को गठन भयो होतो, लगत मोठी संख्या मा पोवार जन रहवसेति जेनकि मायबोली पोवारी से।

---

1. P.136, Language chapter of Census India, 1891, Volume 11, Part 1, published in 1893
2. Census of India, Central Provinces (3v.), 1901, page 173 & Census of India: Volume 10, Parts 1-2, page 188.

पोवारी भाषा येक पुरातन भाषा आय अन् यव पोवार जेला छत्तीस कुरया पंवार समाज भी कसेती, की आपरी मातृभाषा आय। पोवारी भाषा को आपरो स्वतंत्र अस्तित्व आय अन् भाषा साहित्यिक नाव पोवारी(Powari) से। पोवार समाज को दूसरों पुरातन नाव पंवार होन को कारन पोवारी ला पंवारी)Panwari) भी बोलन मा आवसे। देश मा भाषा इनको अध्ययन प्राचीन काल लक़ होय रही से परा सम्पूर्ण अखंड भारत मा एकजाई भाषाई अध्ययन बीसवीं सदी की शुरुवात मा गियरसन महोदय को नेतृत्व मा भयो जेमा पोवारी भाषा को विषय मा विस्तृत शोध प्रकाशित भयो होतो। येको पहिले अन् बाद को सप्पाई अध्ययन मा यव तथ्य भेटसे की पोवारी भाषा, पोवार समाज की आपरी येक भाषा से अना समाज को क्षेत्रवार विस्थापन का प्रभाव पोवारी भाषा मा दिस जासे।

पोवारी भाषा पुरातन से अन येको लगित अध्ययन भी भई से जेको विवरण जनगणना दस्तावेज, जूनो प्रतिवेदन, इतिहास की किताब अना हमारो समाज का लेखकलेख मा मिल /विचारक इनको लिख्यो किताब/ जासे। इनला देखकन यव त् सिद्‌ध होसे की पोवारी पुरातन अन समृद्धशाली विरासत की धनी आय। पोवार समाज को बिहया, नेंगदस्तूर-, रोज का कामकाज, सनसांस्कृतिक कार्यक्रम को -तिव्हार असो सामाजिक-गीत, पोवारी भाषा मा होनो यन बात को प्रमान से की पोवारी भाषा, छत्तीस कुरया पोवार समाज की सांस्कृतिक विरासत ला आपरो मा समाहित कर राखिसे।

कोनी भी समृद्ध भाषा अन् संस्कृति को विकास ला कई सदी लग जासेती। आपरी पोवारी भाषा अन् पोवार समाज की संस्कृति को विकास भी असो मोठो कालक्रम मा क्रमबद्ध उन्नत होन को परिचायक आय। पोवारी भाषा मा मालवाअज़ को मध्यप्रदेश रा) राजपुताना-जस्थान गुजरात को सीमावर्तीय क्षेत्रकी भाषा इन लक़ साम्यता दिससे। पोवार समाज को (पुरातन भाट न् आपरी पोथी मा वैनगंगा क्षेत्र को पोवार इनला मालवा का प्रमार अना उनको नातेदार क्षत्रिय इनको संघ लिखिसेत्। मालवा मा प्रमार

वंश को शासन होतो। प्रमार राजा अन उनको नातेदार कुल, पोवारपंवार / जाति को कुल आती। मालवा परा प्रमार वंश को शासन की समाप्ति को बाद पोवार इनमा कई क्षेत्र मा विस्थापन भयो। कई पोवार, नवो क्षेत्र मा राजपूत, मराठा अन कई समाज मा कुल को रूप मा शामिल भय गईन परा मालवा की एक जाति को रूप मा पोवार समाज लम्बो समय तक संग मा रहयो अन बाद मा यव पोवारी कुनबा वैनगंगा क्षेत्र मा आयकन बस गयीन।

आज लक् तीस बरस को पहिले तक पुरो समाज पोवारी मा च बोलत होतीन। आधुनिकीकरण को दौर मा समाज मा पोवारी बोली ला सोडकन मध्यप्रदेश मा हिंदी अना महाराष्ट्र मा मराठी को प्रयोग अधिक करीन लगिन एको प्रभाव लक समाज कई संख्या को अनुपात मा पोवारी बोलन वाला कम भय गयीन । २०११ कई जनगणना मा आपरी मायबोली को रूप मा लोख गिनना दर्ज करायिन। गाव मा अ ज भी पोवारी समाज मा बोली जासे परा शहर मा बहुत काम भय गयी से। पोवारी बोली आपरो पुरखागिन कई पहिचान से अना यव बोली पोवारी संस्कृति को अटूट अंग से एको लाई पोवारी बोली को जतन अना अधिकाधिक प्रचार प्रसार बहुतच जरुरी से।

....

मनोगत

जिनक् नाव मां से तपोबल शाली ऋषित्व को सार असा आमरा प्रेरणादायी इंजि. ऋषी भैया बिसेन | जिनक् व्यक्तित्व की आधारशीला अध्यात्म से | प्रशासकीय सेवा मां कार्य की व्यस्तता कोनीसंग छुपी नाहाय | परंतू भारत क् गौरवशाली इतिहास अना संस्कृतिन् कवीला मोहित कर टाकिस.जेन् बिरादरी मां आपलो जन्म भयी से वोन् बिरादरी की बोली संस्कृती,खान पान,रितीरिवाज इनको वैज्ञानिक महत्त्व खोजकन् वोको संवर्धन करनसाटी कवी तत्पर सेती.पोवार समाज संकुचित नहीं व्यापकता को प्रतिक आय येको तथ्यसहित प्रस्तुतीकरण कविताक् माध्यम लक येन् कावूयसंग्रह मां सम्मिलित से | निजी पोवारी संस्कृतिलक् भारतीय संस्कृति को परिचय कविता क् माध्यम लक कवीनं करीसेन |

छत्तीस कुल का क्षत्रिय पोवार समाज अजवरी कसो विकसित भयेव् येकी तथ्यसंग जानकारी कवीन् येन् संग्रह मां काव्यस्वरूप मां देईसेन| संस्कृती को संवर्धन करनसाटी आत्मशक्ती को विकास होये पाहिजे येकोसाटी हृदय मां आत्यंतिक भगवत भक्ती को भाव जगाये पाह्यजे येकोसाटी काव्यमय भगवन् आराधना बी येन् संग्रह मां सम्मिलित से.

प्रस्तुत कविता संग्रह नवोदित साहित्यिक इनला एक मार्गदर्शक ठरे या विश्वास से | कवी की आत्यंतिक ईश्वरभक्ती,समाजभक्ती अना राष्ट्रभक्ती कविता क् माध्यमलक झलकसे |

कवी इंजी श्री.ऋषीभैया बिसेन इनला इतिहास संशोधन मां विशेष रूचि से ! या रूचि अशीच प्रज्वलित रहे अना नवनवो संशोधित साहित्य सृजन होये येन् अपेक्षाक् संग प्रस्तुत कविता संग्रहला शुभकामना |

.....रणदीप कंठीलाल बिसने, सहायक शिक्षक

ऋषि भाऊ पोवार समाज मा समाज ला साहित्य लक आगे करन को जो काम तुम्ही कर सेव यो सबको बस की बात नहाय. सरकारी डिवटी मा रवन को बाद भी समाज लाय समय निकालकर जन जागरण करनो काबीले तारीफ से हमरो लाय. अना असोच मार्ग पर नवयुवा पिढ़ी ला आगे आवन लाय हमेशा प्रोत्साहित करत रहो याच आग्रह से मोरो जय राजा भोज जय श्री राम जी

........विद्या बिसेन, बालाघाट

आदरणीय सर आपलो पोवारी कविता संग्रह की छत्तीस कविता बाचेव, आपलो व्यस्त दैनंदिनी मा लक् समय कहाडक्यान मायबोली पोवारी की सेवा करणो या बोहुत मोठी अना गर्व की बात से. आपली कविता देवभक्ती, देशभक्ती, पोवार समाज को अभिमान, निसर्ग कृतज्ञता, पोवारी परंपरा, बालमन पर संस्कार असा बोहुत सारो विषयपर सेत. सब कविता समजन ला सरल सेत पर उनको संदेश वोतरोच गहन से. आपलो येन नवीन कवितासंग्रह बोहुत बोहुत शुभकामना सेत.

......महेंद्र रहाँगडाले

"पोवारी "छत्तीस कविता को संग्रहित काव्यसंग्रह साठी मा. ऋषी जी बिसेन इनला बहुत बहुत बधाई. जिज्ञासु मन, सबको उत्थान, प्रेरणा अना भावनावश कवि मन रवसे. मा. ऋषी बिसेन इनको औदा बहुत मोठोसे जेतरी जिम्मेदारी मोठी ओतरोच मन भी प्रबल रवसे. कुलदैवत महादेव को आराधना पासून सुरू भयोव "पोवारी" काव्यसंग्रह को प्रवास छत्तीस कुर का आमी पोवार वरी बहुतही अभ्यास पूर्ण से. "पोवारी" काव्यसंग्रह मा उनको व्यक्तीमत्व की छाप सहज दिससे.

संस्कार, संस्कृती को महत्त्व यन काव्यसंग्रह मा वय बार बार पटायकन देसेत.भक्तीमय हिरदय ,सही भक्ती मार्ग ,युवा समाज को उत्थान

साती वय प्रभू आराधना करसेती. कसो करबिन बडीमाय नवी पीढी ला जगावन अना सांस्कृतिक धरोहर संभालनो को आव्हान वय युवा पिढीला करसेत.जुनी पीढी संग नवी पीढी संग तालमेल को अविरत प्रयास यन काव्यसंग्रह मा करी गई से.

 “नवोत्थान" " सफलता "यन कविता को माध्यम लका शिक्षा, सुसंस्कार को महत्त्व बखान भयी से. मातृभाषा प्रेम छत्तीस कुर का पोवरोंको इतिहास उनको गौरवशाली जीवन,वीरता, मेहनत बाचकन मन आपलोआप खूदपर पोवार होनको गर्व अनुभव करसे. कविता संग सिहारपाठ,चारोली लक योव कवितासंग्रह सुशोभित भयी से.

यन कवितासंग्रह मा देवघर,मयरी,कोल्हू,बईल,मईल,मोहतुर,कासरा असा हिरदा का जवळका शब्द कवींन् सहज वापरेलका काव्य भाषा मधुर भयी से.पुरो काव्यसंग्रह ओजस्वी अना पोवारी भाषा को परिस म्हणून साकार से योव अमृत मय ज्ञानयोग बाचकन सब हकदार बनो या मी विनंती करसू

ओजस्वी से, पोवारी काव्यसंग्रह, अमृत योग को हकदार, साती करुसू आग्रह

..........शेषराव येळेकर/दि.१/११/२०२३

मातृभाषा पोवारी या पोवार समाज व पोवारी संस्कृति को अभिन्न अंग से. भारत की आजादी को पश्चात् मातृभाषा पोवारी की उपेक्षा भयी.असी विपरीत परिस्थिति मा श्री.ऋषि बिसेन इनको द्वारा मातृभाषा पोवारी मा रचित "पोवारी" नामक तीसरी किताब को प्रकाशन होनो, समाज साती अत्यंत गौरवास्पद व प्रेरणादायक से.

पोवारी काव्यसंग्रह मा निहित सभी कविताएं श्री ऋषि बिसेन (IRS) इनकी उत्तम काव्य-कला व संस्कारित जीवन की परिचायक सेती. कविताओं मा देशभक्ति, माता-पिता को सम्मान , सनातन हिन्दू धर्म को प्रति निष्ठा,समाजोत्थान की आकांक्षा, मातृभाषा को प्रति अटूट प्रेम , समाज

की पहचान को प्रति निष्ठा, इतिहास को स्वाभिमान आदि. जीवन मूल्य पूर्ण आवेग लक प्रगट भया सेती.

श्रेष्ठ साहित्यिक श्री ऋषि बिसेन यदि हिन्दी मा साहित्य सृजन करता त् उनला अधिक नावलौकिक प्राप्त होनो सहज संभव भयेव रव्हतो. लेकिन आपली मातृभाषा, समाज, समाज की पहचान व समाज को गौरवशाली इतिहास को प्रति असीम निष्ठा को कारण उनन् आपली उच्च प्रतिभा ला मातृभाषा पोवारी की दिशा मा मोड़ देईन. अतः मातृभाषा व समाज को प्रति उनको येव समर्पण व त्याग अनमोल, प्रेरक व उल्लेखनीय से. नवीन रचना को प्रकाशन को पावन अवसर पर श्री ऋषि बिसेन इनला मोरी अनंत शुभकामनाएं. ईश्वर उनला मातृभाषा पोवारी को सशक्तिकरण व उत्कर्ष साती भरपूर शक्ति देओं, याच सदैव मोरी प्रार्थना से.

.........इतिहासकार प्राचार्य ओ सी पटले/गुरु २/११/२०२३

रचना सेती तुमरी
एकदम बढिया
दिससेती काव्यमा
भक्तीरस की नया.

समाज को प्रतीक
झलक्से प्रेमभाव
पोवारी उत्थानमा
कविता को से धाव.

सफलता को लक्ष्य
पोवारी संग्रहमा
संस्कृती की जतन
तुमरो लिखानमा.

बाचके संग्रहला
प्रसन्न होसे मन

भेटसे भाषा ज्ञान
समाजला शिकन.

अभिप्राय मोरो से
पोवारी संग्रहला
अप्रतिम लिखान
या शुभेच्छा तुमला.

........उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)/गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू पुणे)

सर तुमरी रचना बहुत सुंदर अना भक्तीरस, समाजहित,भाषाहीत, संस्कृती की जतन, पोवारी धरोहर प्रती अप्रतिम लगाव दर्शावनेवाली काव्य रचना सेती ऋषी भाऊ बिसेन की कविता.... आमरो क्षत्रिय पोवार समाज समृद्ध असो सनातनी धर्म ला माननारो. सुसंस्कृत सभ्यता अना हिंदू संस्कृती, परंपरा ला माननारो.

आमी भगवान शिव का पूजक अना माय गडकालीका का उपासक असो ऋषी भाऊ बिसेन जी की यन् किताब को सुरवात की भगवान शिव की आराधना करती कविता. येन् संपूर्ण कविता संग्रह की एक से बढकर एक लाजवाब सुंदर अना सुशोभित करनारी रचना मा भाऊगिन् आमरो पोवार वंश की महिमा मंडल करनारी, मानव जीवन को अस्तित्व को सहजभाव को स्वीकार को महत्व सांगी सेन्. एक समय समस्त भारत भूमि पर पोवार वंश बोलबाला होतो. धर्म न्याय ज्ञान शासन शांती विसरता प्रजावतसलता को आदर्श असो आमरो पोवार वंश न स्थापित करी होतीस.

आमरो पोवार समाज नं समय की मार झेलकर स्थलांतरित होयस्यारी भी कसो हार नही मानीस् अना आपरो धर्म संस्कृती को प्रतिक आस्था ठेयकर समस्त जगत मा नाव करिस. पर आपली पोवारी बोली की गरिमा कायम ठेईस असो अच्छो वर्णन करी सेन्. कुल मिलायकर कर येन् कविता किताब मा आस्था अना पोवारी बोली अना पोवार समाज को बारामा ऋषी भाऊ को पेरम्, आदर दिस् से.

या ऋषी भाऊ की दुसरीच् रचना किताब आय् त् येको मा काही नवाडोपन काही अच्छोपन अवश्य झलक् से. पर याच बात उनको येन् क्षेत्र मा चांगलो भविष्य की भी झलक देसे. मी ऋषी भाऊ को उज्ज्वल भविष्य की कामना करुसू अना येन् कविता किताब साती ऋषी भाऊ बिसेन जी ला बोहुत बोहुत बधाई देसू. जय राजाभोज! जय पोवार समाज! जय पोवारी बोली!

..........छगनलाल रहांगडाले/खापरखेडा नागपूर

आपलो मन का भाव, समाज की जानकारी , सामाजिक समस्या , चिंतन पूर्ण विचार आदि अत्यंत मनमोहक तरीका लक काव्य संग्रह को रूप मा प्रस्तुत करके , पोवारी बोली का शब्द सुमन एक पुस्तक रूपी हार मा गुफ के श्री ऋषि बिसेनजी इनन पोवारी भाषाला समृध्द करतो असो साहित्य निर्माण करिसेन ।

पोवारी दरअसल भारत को अलग अलग क्षेत्र की बोली भाषा को पुरानो मिलोजुलो स्वरूप आय । भाषा विरासत को दृष्टिकोण लक महत्वपूर्ण असी पोवारी बोली भविष्य मा जीवित रव्हन लायी जो प्रयत्न वय कर रह्या सेत, जो चिंता उनला से , जो उत्कंठा उनको मन मा से , वा सही मा प्रशंसनीय से ।

उनको कार्य नवी पीढ़ी लायी प्रेरणादायी से । आमरी जो धरोहर से वोको प्रति आस्था, प्रेम व्यक्ति मा कसो होना येको उत्तम उदाहरण कही देखनो से त् वु उदाहरण श्री ऋषिजी को रुपमा समाज मा से ।

साहित्य को असो च सृजन उनको द्वारा होत रहे असी अपेक्षा से । उनको येन किताब लायी अभिनंदन से ।

..........इंजी. महेन पटले/मार्गदर्शक/अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार पोवार महासंघ भारत

वैदिक सनातन धर्म संस्कृति रक्षक अना धर्म ध्वजवाहक पोवार समाज मा जन्म लेयसानी यदि हमी एको ऋण नहीं उतार पाया त, वास्तविकता मा येला अज्ञान दशा कहयो जाये. जसोकी की आमला सबला ज्ञात से की अमरा आराध्य देवत श्री राम भगवान, अना आदर्श वैराग्य महात्मा भरतरी, सम्राट विक्रमादित्य, राजा भोज देव पोवार समाज का प्रेरणा स्रोत आती.

पोवार/ पंवार शब्द को उच्चारण मात्र लगा पोवारी बोली आना पोवार समाज को गौरवशाली इतिहास को सहज ज्ञान होय जासे. "पृथ्वी तंना पंवार" या गौरवशाली बात आपलो ऐतिहासिक ग्रन्थ मा असोंच लिखेव नहीं गयी से, पन सत्य अवलोकन अना वास्तविकता को मूल्यांकन को प्रमाण पत्र आय.

आमरो पोवार वीर को उतपत्ती को बारे मा उल्लेख से की अग्निकुंड लका गुरु ऋषि वशिष्ठ द्वारा भई से. एक बात निश्चित से की अग्निसमान तेजस्वी, प्रखर समर्थवान, शक्तिशाली, शुद्ध सनातन धर्म ध्वजा रक्षक तेज समाज को प्रत्येक व्यक्ति को मुख्य मंडल पर दिससे. सैकड़ो लोग रहे पर भी पोवार व्यक्ति आपको समाज को व्यक्ति ला थोड़ा बहुत निरीक्षण लगा भाँप लेसे की ये योक पोवार समाज को आय, असो सनातन तेज धारन करने वालों पोवार समाज ला वंदन से.

पोवार समाज को वीरता ला देख स्यानी, 1908 को बेरा देवगढ नागपुर को राजा बुलंदबख्त न पोवार समाजवीर ला आपली शक्ति बढ़ावन साती बुलावा धाडिस, अना मुश्लिम आक्रांता लका पोवार समाज वीर इनन निजाद देवाइन. एको पुरस्कार स्वरुप वैनगंगा क्षेत्र मा जमीन अना जागीरदार देइन. अना नगरधन किल्ला को प्रभुत्व भी 36 कुल पोवार इनन बखूबी निभाईन.

अज माय वैंगगंगा को क्षेत्र गोंदिया भंडारा बालाघाट सिवनी मां 36 कुल पोवार इनको मूल अस्तित्व बसी से. पोवार की आत्मा पोवारी बोली में बसी से आना पोवारी बोली को उत्थान विकास वास्तविकता मा समाज को

सर्वांगीण विकास को मुख्य घटक आय. आज को परिपेक्ष येव मुख्य घटक पर काम कारण को जो महत्वपूर्ण कार्य से वोको बीड़ा पोवार रक्षक साहित्यिक कर रहया सेती.

येन श्रृंखला मा आमरो 36 कुल पोवार / पंवार समाज को गौरव, अना एक हिरा समान समाज रक्षक इनन बड़ों मनोयोग लका बीड़ा उठाई सेत अना इनन प्रतिपल एक-एक कर स्यानी एक मजबूत अभेद्य किल्ला समान गद्य/पद्य साहित्य को निर्माण करी सेत. लेखक कौनतोभी परिचय को मोहताज नहाती. पन नवनिर्मित कविता संग्रह की किताब पर मनोगत लिखन की बात जब आई, त येव एक महत्वपूर्ण अना उल्लेखनीय बात ज समाज को सामने ठेवन को अवसर प्राप्त भयेव असो मोला लगेव. कारण की व्यक्तित्व स्वयं अष्ठपैलू हीरा सामान से. लिखना जाए तो लेखनी लिख नहीं पावन की येतरा विचार मन में आवसेती, तरी संक्षेप मा विचार ठेवन को प्रयास करूसु.

अत्यंत मनमीलावू स्वभाव, बहुत सरल, मृत्यु वाणी मा मिठास, आकर्षक तेजस्वी प्रभावी आभामंडल, हंसमुख अना कोनिला भी आपलो आपलो लगे असो व्यक्तित्व को धनी आदरणीय श्री ऋषि भाऊ बिसेन (IRS). IRS येन बातला अंतिम मा लिखन को कारण भी असो से की, कोई भी समय असो अनुभव नहीं आयेव की इनला IRS होनको अभिमान से, ना की वोन बात को कभी देखावा भी नहीं करत. सहिमा बहुत स्तुत्य अना सीखन लायक बात से. येतरो सरल स्वभाव का धनी व्यक्ति आमरो छत्तीस कुल पोवार समाज मा जन्मया. या सबसे खास बात से कि उनको व्यस्ततम दिनचर्या में भी वह समाजसाती समय निकालकर मार्गदर्शन, साहित्य निर्माण पर निरंतर काम कर सेती. आज वोय समस्त पोवार समाज को युवा पीढ़ी लाई एक आदर्श म्हणून देखेव जाय रही से. उनको स्वाभाव की सरलता, उनको प्रभाव की मुख्य स्त्रोत आय. या प्रमुख बात से.

"पोवारी संस्कृति" एक चिरपरिचित ग्रन्थ न पोवार समाज को जनजन मा जागृति को जसो काम करीस, तसोंच काम "पोवारी धरोहर" येन

किताब न करिस. येव सफर निरंतर अविरत सामने बढ़त चलेव अना नवीन साहित्य रत्न सामने आयेव "पोवारी भाषा का परिचय". लेखक को यह प्रयत्न एक अद्‌भुत अना चिरकाल साती विद्यार्थी इनको अना समाज को मार्गदर्शन मा काम करने वालों ग्रंथ साबित होय रही से. येन पुस्तक को रेफरेंस लगा छत्तीस कुल की पोवारी बोली समृद्ध अना अजेय अभेद्य किला समान साहित्य रत्न श्रेणीमा आई गई. भविष्य या हिंदी में लिखी पोवारी भाषा को परिचय पुस्तक सत्य को पक्ष ठेवन साती बहुत उपयोगी सिद्ध होये एको मा काही संशय नाहाय.

"देवघर" किताब मा रचित उत्तमोत्तम संस्कृति रक्षक, बोधकथा, सत्यकथा, प्रसंग कहानी मनला भाव विभोर कर लेइन. अना येन कथासंग्रहन आपलो एक विशेष स्थान छत्तीस कुल पोवार /पंवार समाज मा निर्माण करिस. लेखक/कवि को रूप में एक सूर्य समान प्रभावी काम अना पोवारी बोली को आगाज प्रस्तुत साहित्यिकन करीन, अना संपूर्ण समाजला बहुत गर्वास्पद अना अभिमान की बात से.

पन बात यंहा थमी नहीं, अपितु या साहित्य की धारा निरंतर बढ़त जाय रही से. एक नविन तेजस्वी 36 कविता को संग्रह रूपी साहित्य को सर्जन आदरणीय साहित्यिक श्री ऋषि बिसेन जी इनको द्वारा भई से, अना मनोगत लिखन को पहले जब 36 कविता को आनंद लेयो, तब पता चलेव कि, माय बोली की अमृतमय की चासनी मा एक-एक कविता नाहाए कर निकली से. पोवार समाज की पोवारी बोलीला येन कविता संग्रहन एक नवीन आयाम, एक नवीन दिशा देई सेस. छत्तीस कुल पोवार समाजला 36 नवप्रकाशित कविता को अनुपम भेंट देन साती कवि श्री ऋषि बिसेनजी ला मानोमय हार्दिक अभिनंदन करूसू अना शुभकामना देसु की छत्तीस कुल पोवार समाज उत्थान की या श्रृंखला अविरत नव नवीन साहित्य को रूप में आवती रहे, या भगवान महाकाल को चरणों मा प्रार्थना.

पुरातन ऐतिहासिक स्थापित 36 कुल पोवार जात अना पोवारी भाषा मा येन पुस्तक का लेखक आदरणीय श्री ऋषि बिसेनजी को अमूल्य योगदान

से. पुरातन अना ऐतिहासिक धरोहर ला रक्षित अना संवर्धन साती ये किताब मिल को पत्थर साबित होयेति, कारण की कई भ्रमित व्यक्ति अना काही नवनिर्मित संस्था इनन दुय अलग जाती (पोवार +भोयर) की भाषा /बोली ला एक हाइब्रिड नाव (पवार) देयकन दुष्प्रचार चालू करी सेत. इनको मिश्रण ला ऐतिहासिक आधार बिल्कुल भी नाहाय. पन इनको दुष्प्रचार ला आता सत्य स्थापित करने वालों सत्यशोधक ना सच्चों साहित्यिक अना इतिहासकार इन लगाम लगइन. भाषाको नाव अना पहचानला समृद्धि बनावन मा येव 36 कविता को संग्रह अमूल्य योगदान साबित हुए याच महाकाल को चरणों में प्रार्थना.

जय महाकाल, जय श्री राम

..........ऋषिकेश गौतम, ढाकनी, गोंदिया

श्री ऋषीजी बिसेन इनको पोवारी येव कविता संग्रह प्रकाशित होय रही से यकसाती मोरकलका का हार्दिक अभिनंदन! पोवारी या पोवार समाज की मायबोली आय. पोवारी यव शब्द पोवार समाज साती श्रद्धा आपलोपन, पवित्रता अना सभ्य संस्कृती को प्रतीक आय. पोवारी मायबोलीक प्रचार प्रसार करनसाती, पोवारी क संवर्धनसाती अना पोवारी को सन्मान बढावनसाती श्री ऋषीजी बिसेन सदा तत्पर रवसेत. पोवारी मायबोलीला साहित्यमा विराजमान करनसाती अना पोवारीको गौरव बढावनसाती श्री ऋषीजी बिसेन इनको पोवारी यव काव्यसंग्रह बहुत ही महत्त्वपूर्ण से.

पोवारी येनं कविता संग्रह माध्यमलका पोवारी मायबोली को मानसन्मान बढे पायजे पोवारी को गौरव समाजजनवरी जाये पायजे अशी कवी की मनशा से. यकसाती साहित्यिक श्री ऋषीजी बिसेन इनको पोवारी साहित्यमा योगदान बहुत ही गौरव की अना गर्व की बात से.

श्री ऋषीजी बिसेन इनको पोवारी यव कवितासंग्रह मायबोलीला सजावनसाती कवितारूपी सुंदर सुगंधीत पुष्पकी माला आय, असो लगसे. यनं पोवारी रूपी मालाको सुगंध भारतभर जाये असो मोला लगसे.

कविता संग्रह की सुरुवात महादेवक जयजयकारलका भयी से. यनं कवितामा पोवार समाज का आराध्य दैवत महादेवक बाऱ्यामा भक्ती भाव उजागर होय रही से. कवी श्री ऋषीजी बिसेन इननं आपला पूर्वज इनको मान सन्मानला बहुत महत्व देई सेन. पोवार समाज खेतीप्रधान, मेहनती अना स्वाभिमानी समाज से. यको सुंदर गुणगान कविताक माध्यमलका करी सेन. पोवार समाजको उत्थान भयेव पायजे असो कवीला अंतःकरणलका लगसे. यको प्रतिबिंब समाजोत्थान यनं कवितामा चोवसे.यव पोवारी कविता संग्रह पोवारी संस्कृती गुण गौरव अना देशप्रेम लका सुशोभित भयी से.

पोवारी यव कवितासंग्रहमा श्रमप्रतिष्ठा, मानसन्मान, संस्कृती प्रेम, समाज प्रेरणा अना नैतिक मूल्य संवर्धन असा गुण उजागर भया सेत. श्री ऋषीजी बिसेन इनको पोवारी यव कवितासंग्रह पोवार समाजासाती एक मौलिक साहित्यकृती साबित होये असो मोला लगसे.

पोवारी कविता संग्रहकं बाऱ्यामा मोरी काव्य पंक्ती -

समाज प्रेम को भाव चोवसे
चोवसे मूल्य शिक्षा बी न्यारी
पोवारी को गौरव बढावसे
यव कवितासंग्रह पोवारी ।।१।।

खेतीबाडी मा किसान राबसे
सदा मेहनत से वला प्यारी
यनं किसानको गुणगान करसे
यव कविता संग्रह पोवारी।।२।।

कवितासंग्रह मा मिठास भरीसे

जसी साखर संग सुवारी

संस्कृती की शोभा बढावसे

यव कविता संग्रह पोवारी ।।३।।

श्री ऋषीजी बिसेन इनकं पोवारी यनं कविता संग्रह रूपी साहित्यकृतीसाती मी अभिनंदन करूसु अना पोवारी साहित्यमा योगदान देनसाती उनला बार बार नमन करूसु.

.........डॉ. शेखराम परसराम जी येळेकर/सहयोगी प्राध्यापक, नागपूर

मोरपंख सी सुंदर पोवारी

शहदसी मीठी बोली मोरी

छत्तीस रचनालक सजी से

किताब ऋषिजीकी पोवारी

लेखक, कवी श्री. ऋषी बिसेनजी ये परिचय का मोहताज नहाती. जसो नावं तसो कार्य. एक ऋषी जसो तनमन लक तप करसे अना मनोवांक्षित फल पावसे, तसो "पोवारी" काव्यसंग्रह का कवी काव्यरूपी माला सजायके पोवारी बोलीला उच्चतम स्थान पर लिजान साती प्रयत्नरत सेती. कोरोनामा, माय गढकालिकाको कृपालक कोरेंटाइनमा बारा दिवसको अल्प कालमा ऋषी बिसेनजी न १०८ कविता लिखिन या एक उपलब्धिच आय . पोवार समाजमा जलम्या, पोवारी संस्कारमा पल्या- बढ्या, उच्चशिक्षा प्राप्त करके राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी मा कार्यरत सेती. ऋषी बिसेनजी को स्वभाव मृदुभाषी, विनम्र से. मायबोली पर को निस्सीम प्रेम, मायबोली को उत्थान अना जतनसाती व्यस्त जीवनलक समय निकालके हमेशा तत्पर रव्हंसेती.

"पोवारी" काव्यसंग्रह, कवी की कोरी कल्पना मात्र नोहोय, कवी को एकेक शब्दमा पोवारी बोलिकी मिठास झलकसे. एकेक काव्यमा पोवारीकी महिमा समाई से. काव्यसंग्रह की सुरुवात आमरा कुलदेवता महाकाल की आराधना " हर हर महादेव" को भक्तीलक होसे. ३६ कुर का आमी पोवार या कवितामा पोवार को मालवा लक विस्थापन अना माय वैनगंगा को कोऱ्यामा कस्या बस्या येको वास्तविक वर्णन कवी न करिसेन. नवी पिढी अना जुनो पिढी को बीचमा की दुरी "कसो करबिन बडीमाय" येन कविता मा कवी न अचूक टिपीसेन. भक्ती अना पोवारी बोलीकी महतीलक येव काव्यसंग्रह सजि से.

एक दून एक सरस काव्यमोती की मालाको " पोवारी" काव्यसंग्रह अनमोल से. उच्चपदस्थ रहके व्यस्त समयमालक समय निकालके पोवारी साहित्यला समृद्ध करनको येव प्रयास सरहानिय से. अना समस्त समाज साती प्रेरणादायी से. "पोवारी" काव्यसंग्रह नवो पिढीसात मार्गदर्शक होये असी आशा करुसू. अना किताब को प्रकाशनसाती शुभकामना देसू.

............सौ छाया सुरेंद्र पारधी

साहित्य समाज की नैतिक अना सांस्कृतिक धरोहर आय साहित्य समाज को आरसा आय काव्य रूपी मनोभाव को मूर्त स्वरूप कविता लिखनो आय पोवारी संस्कृति की मूल 36 कुर पयचान आय येन कव्य सँग्रह मा छत्तीस रचना मा आध्यात्म,ज्ञान, भक्ति, पोवारी, वीरता,राष्ट्रप्रेम,पोवारी संस्कार की अद्भुत रचना की पुष्प माला को निर्माण अना पोवारी काव्य धरा ला नवी ऊर्जा देनो बहुत जरूरी से माय बोली पोवारी को काव्य साहित्य भंडार सदैव भरेव रहे येनच शुभकामना लक श्री ऋषि जी बिसेन (IRS) इनला येन काव्य सँग्रह साठी बहुत बहुत हार्दिक बधाई अना अभिनंदन !

..........डॉ. हरगोविंद टेंभरे

आपलो विशिष्ट अना मधुर रसलक भऱ्या शब्द संसारयुक्त पोवार समाजजन अना मन की पोवारी बोलीनऽ निज समाजच नहीं तऽपोवारी परिवेशमा रवनेवाला पोवारेत्तर समाजपर भी राज करी सेस| आबऽ भी येकी

प्रचिती गावनगाव दिसS से| पर आधुनिक कालमा अन्य बोलीइन को अपेक्षा पोवारी बोली पतन को बाटपर ज्यादा गयी| येला अनपढ़, शिक्षित अना उच्च शिक्षित पोवार भी कारनीभूत सेत| काही जागृत समाज जनइन को ध्यानमा या बात जब आयी तS उननS पोवारी मायबोली को उत्थानलायी कंबर कसीन|

उनमालकाच एक उच्च शिक्षित पोवार मंजे श्री ऋषीभाऊ बिसेन| आपलो स्वतंत्र वैभव, स्वतंत्र गौरवशाली इतिहास अना धरोहरवाली पोवारी बोली को प्रती उननS लेखन कार्य सुरू कर वोका हर पहलू कयीक किताबइन को माध्यमलक समाज को सामने उजागर करीन| उन को यव मानस अना पोवारी बोली को प्रती निःस्पृह पिरेम पोवारी धरोहर येनS कविता संग्रहमा भी टकसार झलक रही से|

येनS संग्रह को माध्यमलक कवीनS मायबोली अना निज समाज को हर सांस्कृतिक पहलू पर परकास टाकी सेन| समाज का आराध्य दैवत, नवी अना जुनी पिढ़ी, क्षत्रिय बाना, दैनंदिन जीवनशैली, देश को उत्थानमा पोवारी बोली, सनातन धर्म, सन तिहार, छत्तीस कुर को बखान अना पोवारी बोली को उत्कर्ष लायी आवाहन, असा अनेक पहलू पर आपला बिचार परकट होता दिसS सेत|

कम भयो मायबोली को मान
आता जित उत डगमगायो ईमान
कसो करबीन बडीमाय आता
जमाना असो काजक दिखाय रही से

सुवारथ की भई आता मोठी गठरी
नहीं सुहावो से आता ठेठरा मठरी
कसो करबीन बडीमाय आता
पोवारी संस्कार आता मुराय रही सेत

येनऽ पंक्तिइनमा कवी की मायबोली को प्रती उत्कट भावना व्यक्त होय रही से|

छत्तीस कविताइन को पोवारी यव कविता संग्रह छत्तीस कुऱ्या पोवार को हरेक जन मनमा निश्चित रूपलक सकारात्मक बदल आने येको मोला सोराना बिश्वास से| पोवारी येनऽ कविता संग्रह ला अना कवीला मी हिरदालका शुभकामना प्रेषित करूस्|

........डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी'/गोंदिया (हामु. उलवे, नवी मुंबई)
तिथी: १५.११.२०२३ (भाईदूज)

"पोवारी" छत्तीस कविता को संग्रह - समाजला पोवारी बोली की खरी पयचान देखाये
"पोवारी" छत्तीस कविता को संग्रह - समाजला पोवारी बोली की खरी पयचान देखाये

श्री ऋषी जी बिसेन IRS, इनको पोवारी बोली मा 'पोवारी संस्कृति' पयलो कविता संग्रह अना 'देवघर' पोवारी कथा संग्रह प्रकाशित भयी से. आता उनको पोवारी बोली मा 'पोवारी' (छत्तीस कविता को संग्रह) दुसरो कविता संग्रह प्रकाशित होय रयी से. या आमरो पोवार समाजसाती बहुत खुशी की बात से. कोणतोच ग्रंथ की सुरूवात मंगलमय रचनालक करन की परंपरा से. श्री ऋषी जी बिसेन इन्न 'पोवारी' छत्तीस कविता को संग्रह मा येनं परंपरा को सुंदर अनुपालन करीसेन. आपलो पोवार समाज का कुलदैवत भगवान शंकर पर 'हर हर महादेव' सृजन को माध्यमलक सबला निष्कंटक राखनसाती देव ला विनंती करत अना 'जगत को स्वामी' को माध्यमलक भक्ति मा रंगस्यान येनं कविता संग्रह की मंगलमय सुरूवात करीसेन.

येनं पुस्तक मा कुल छत्तीस कविता को संग्रह से. येन छत्तीस संख्या मा पोवारी की झलक दिससे. सन १६९१-१७०० को बेरापर राजा बक्त बुलंद की सहाय्यता करन साती आपलो समाज मालवा लका कुटूंब कबिलासहित इतनी बैनगंगा को आँचल मा आया होता. येनं पोवारी कुनबा की ३६ कुर होती. पुरो रीति रिवाज धरकन इतनी आया होता. मुहून येनं ३६

संख्या को आमरो समाज मा महत्व से. छत्तीस कुऱ्या की एक बोली से. वको नाव पोवारी से. या बैनगंगा को आँचल मा अलगच फली फुली से.

बोली छत्तीस कुऱ्याकी, आय आमरी पोवारी |
बैनगंगा आँचल मा, फली फुलीसे या न्यारी ||

श्री ऋषी जी बिसेन इन्न आपलो दुसरो कविता संग्रह 'पोवारी' मा ३६ कविता को संग्रह करस्यान खरो अर्थलक पोवारी बोली को पुनर्जागरण को शंखनाद करीसेन. येनं पार्शभूमिपरच येनं कविता संग्रह को नाव 'पोवारी' (छत्तीस कविता को संग्रह) सार्थक भयी से असो मोला लगं से. पोवारी बोली प्रचार प्रसार साती मंगलमय अना भक्तिमय गीत को संगमा छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय, पोवारी सण तिवहार को महत्व, पोवारी संस्कार पर सजी कविता बहुविध संदेश समाजला देय रही सेत अना नहान टुरूपोटूईनसाती बालगीत लिखस्यान उनको मन मा मायबोली की जागा निर्माण करस्यान पोवारी साहित्यला उचो उठावन की उनकी मेहनत येनं 'पोवारी' छत्तीस कविता को संग्रह मा मोला दिस रही से. असाच समाजला बहुविध संदेश देत "छत्तीस कुर का आमी पोवार" येनं ३६वो कवितालक श्री ऋषी जी बिसेन इन्न येन कविता संग्रह को समापन करीसेन. येनं कविता संग्रह की एक एक कविता को आनंद हिरदा मा भरस्यान 'पोवारी' छत्तीस कविता को संग्रह की काव्यमय अनुभूती समाज का रसिक लेयेती येको मोला सार्थ अभिमान से..

होत होती लुप्तप्राय, मायबोली पोवार की |
होन बसी लिपीबध्द, आता संस्कृती धार की ||

होये समृद्ध पोवारी, गया दिन लाचारी का |
भरे साहित्यलं ढोला, मायबोली पोवारी का ||

करो खुशी मनायके, पोवारी को गुनगान |
मोरो छत्तीस कुर की, होये खरी पयचान ||

आपली माय बोली लुप्त होन को कगार पर होती पर आता पोवारी का धुरकोरी मायबोली पोवारी मा साहित्य की निर्मिती करन सामने आय रह्या सेती अना येको मा श्री ऋषी जी बिसेन सरिखा महानुभाव पुढाकार लेय रह्या सेती येकी मोला बहुत खुशी होय रही से. येनच शृंखला मा श्री ऋषी जी बिसेन इनको "पोवारी" छत्तीस कविता को संग्रह समाजला पोवारी बोली की खरी पयचान देखाये येको मा काहीच शंका नाहाय. पोवारी बोली को संवर्धनसाती श्री ऋषी बिसेन जी को बारा मा मोरा काही दोहा....

सरल मृदु स्वभाव को, असो एक विद्वान |
बढ़ाईस उचो शिकके, बिसेन कुर को मान ||

कृष्णा माय हात लका, सजी सेती संस्कार |
पिता फागुलाल को बी, भेटी से आधार ||

पोवारी संस्कृति अना, देवघर को लिखान |
करके भया समाज मा, ऋषी भाऊ महान ||

देये समाजला दिशा, "पोवारी" को सार |
मोरी या शुभकामना, होये पूर्ण साकार ||

मी श्री ऋषी जी बिसेन इनला 'पोवारी' छत्तीस कविता को संग्रहसाती शुभकामना देसु अना भविष्य मा असाच पोवारी ग्रंथ पोवार समाज को सामने प्रस्तुत करेती असी अपेक्षा करूसु.

..........इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'
अध्यक्ष, साहित्यिक समिती,
अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ, तथा
जिल्हाध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद नई दिल्ली,
विदर्भ प्रांत, गोंदिया जिल्हा इकाई.

पोवारी संस्कृती, पोवारी बोली बचावनसाठी समाजका उच्चशिक्षित व्यक्ती आबं झटरया सेती, या समाजसाठी गौरवकि बात से. संस्कृतीलकाच ज्ञान शोभसे. जेकं जवर उन्नत संस्कृती से वु देस अखिरवरी टिकसे. नुसतो ज्ञान काही कामको नाहाय. कवि ऋषीजी बिसेन आयकर विभागमा आयुक्त पदपरा रवनकं बादमाबि संस्कृती अना पोवारी बोलीसाठी झट रह्या सेती. आमरं समाजका वय भूषण सेत. उनको दुसरो काव्यसंग्रह प्रकाशित होय रहीसे या खुशी कि बात से. पोवारी साहित्यमा वकोलका भर पडे. पोवारी बोली टिकावनसाठी यनं बोलीमा साहित्यिकइनकि गरज से. आबं समाज का जागरूक, विद्वान व्यक्तिकरलका यव काम होय रहि से, सबनं यनं कार्य को स्वागत करे पायजे.येव काव्यसंग्रह आध्यात्मिक, सामाजिक स्वरूपको से.याहानी भक्ती, करूण रस प्रधान से. हर हर महादेव, मन कि शक्ती, मायबोली पोवारी, देस को उत्थान यनं कवितायमा कविनं आपलं कवितायकं माध्यमलका मनला संस्कारित करनसाठी, प्रभूभक्ती परा लगावनसाठी प्रेरित करिसेन. भक्तीलका मन शुद्ध होसे,एकाग्र होसे. शुद्ध अन एकाग्र मनच समाजासाठी काम कर सकसे. कवी ऋषीजी बिसेन इनला उनकं काव्यसंग्रह साठी मोरो करलका अबार भर शुभेच्छा सेती. जय राजाभोज।जय श्रीराम।

.........पालिकचंद बिसने स.शि./मु. सिंदीपार(लाखनी) ता.लाखनी जि.भंडारा भ्रमणध्वनी-९४२१७१६१२८

पोवारी बोली पोवार (पंवार) समाजको पिढिन पिढी को वारसा आय. आमरं पुर्वज ईननं वोको जतन करस्यारी आमरो वरी पोवचाईन. येनं वारसाला जतन अना संवर्धन करनो आमरो परम कर्तव्य से. पोवार समाजला पोवारी बोलीलक एक स्वतंत्र पयचान से. असो पोवारी संस्कृतीको गौरवशाली वारसाला साहित्य को माध्यमलक प्रवाहित ठेवनको प्रयास पोवारी साहित्यिक कर रह्या सेती. साहित्यिक श्री. ऋषीजी बिसेन येनं कड़ी मा पोवारी येनं पुस्तक को माध्यम लक एक नवी कड़ी जोडन को काम कर रह्या सेती. ऐको साती उनको बहुत बहुत अभिनंदन से.

पोवार समाज आपलो पोवारी बोलीला प्रवाहीत करस्यान समृद्ध करन साती सदा अग्रेसर से. येनं कार्यला साहित्य को माध्यम लक प्रवाहीत ठेवनसाती कवी ऋषीजी बिसेन सतत कार्यरत सेती. उनको येव कविता संग्रह पोवारी साहित्यमा नवचेतना जगाये अशी मोला आशा से. कवी आ. ऋषीजी बिसेन इनको कविता संग्रहसाती हार्दिक हार्दिक शुभकामना!

...........गुलाब बिसेन

बालसाहित्यिक

संपादक झुझुरका पोवारी बाल ई मासिक

....

संपादक की कलम लक............

पोवारी, किताब, पोवारी भाषा मा लिखी यन भाषा को परिचय को संग छत्तीस कविता इनको संग्रह आय। श्री ऋषि बिसेन जी द्वारा लिखी या पांचवी किताब अना पोवारी भाषा मा चौथी आय। प्रथम खंड मा कवी को द्वारा पोवारी भाषा की उतपप्ती, येको विकास अना भाषा को इतिहास को संग पोवारी भाषा को पुरो परिचय आय गई से। दुसरो भाग मा कवी को द्वारा लिख्यो छतीस कविता इनको समावेश आय। छत्तीस कुल पोवार समाज को इतिहास अना संस्कृति को यन किताब मा मोठो साजरो समन्वय पढ़नमा आवसे। तसच समाज को उत्थान की ललक कविता को रूपमा दिस जासे। नवी पीढ़ी अना उनको संस्कारित उत्थान साती कई कविता यन संग्रह मा समाहित सेती। पोवार समाज दर्शन लाइ या किताब आपरो आप मा एक आरसा कहवयो जाय सिक से। मोला यन किताब को संपादन करन को सौभाग्य मिलीसे अना मी कवी श्री ऋषि जी बिसेन ला असो साजरो ग्रन्थ लिखन लाइ उनला अनंत शुभकामना देसु अखिन आशा करुसू की वय पोवारी भाषा मा निरंतर लिखकन यन भाषा को जतन मा आपरो योगदान देता रहेती।

बिंदु बिसेन
सामाजिक कार्यकर्त्ता
उपाध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ

अनुक्रमणिका

....

१.
हर हर महादेव

हे देवो का देव, महाकाल महादेव,
सेंव मी तोरो भक्त,
हर हर महादेव.........

तोरी से कृपा दृष्टि, धन्य भयो मी देव,
राखो असच किरपा,
हर हर महादेव......

सबका करो उद्धार, ओ मोरो देव,
तुम्ही जगत का तारन हार,
हर हर महादेव......

कलयुगी माया, दूर करो मोरो देव,
धरम पथ परा राखो,
हर हर महादेव......

जीवन की नैया, पार लगाव मोरो देव,
सबला निष्कंटक राखो,
हर हर महादेव......

....

२.
जगत को स्वामी

जगत को तुम्ही स्वामी सेव अंतर्यामी,
भक्ति मा तुमरी रंग गई सेजन आम्ही।

करता अना धरता सेव तुम्ही जगका,
राखो मान प्रभु तुमरो यन भगत का।

रस्ता परा होतो इत कारो गुप इंधारो,
किरपा लक़ तुमरो आय गयो उजारो।

तुमरी किरन लक़ चमको से या जग,
राखी सेव तुमना इतन् ख़ुशी का नग।

होन वारी से आता ज्ञान भरी सकार,
नहाय कोनी मोला भक्ति का अकार।

जगत ला कई रंग तुम्ही न् च देई सेव,
तपस न् दुःख ला तुम्ही न् हर लेइ सेव।

तुम्ही सत धरम अना ज्ञान का स्वामी,
तुमरो च संग संग मा जाबिन आम्ही।

महिमा मय जगत का सेव रचनाकार,
पिरम भाव लक़ आईसे यव आकार।

मानव का स्वरूप आय तुमरो आकार,
सन्मार्गी करहेती तुमरो सपन साकार।

मन माज़ब जगत को स्वामी आवसे,
आयकन सबको दुःख ला बिसरावसे।

जे करेती सच्चोमन लक तुमरी भक्ति,
सदा रहे ओनको संग तुमरी आशक्ति।

जगत को तुम्ही स्वामी सेव अंतर्यामी,
भक्ति मा तुमरी रंग गई सेजन आम्ही।

....

३.

मी सुमरुसु तोरो दरस लाई

मी सुमरुसु तोरो दरस लाई
शकार पासून को रात्री वरी

जानुसू मी कलयुग आय यव
दरस नही देवनका तुम्ही मोला

मन मा मोरो से यव मोठीआश
होहे तुमरो दरस यव से विश्वास

सपन मा येक रोज आयो प्रभुजी
कसे मोला कित देख रही सेस तू

मी त तोरो मन माच बसी सेव
तू आपरो मन लका त सुमर

मी त तोरो जवरच बसी सेव
मी सुमरुसु तोरो दरस लाई

....

४.
मन की शक्ति

इंधारो की यव मोठी कारी रात मा ।
येखलो सेव मी नहाय कोनी संगमा ।।

डराय गयी सेंव देखकनअसी रात ।
गार वानी भय गया सेती मोरो हाथ ।।

रस्ता नही चोय रही से आता मोला ।
कोनी सांगो कसो भेटे मंजिल मोला ।।

सूनो रस्ता ल आता कोन पार कराहे ।
सांगो आता की इंधारो ला कोन डराहे।।

हिरदय मंग कसे की डोरा नोको मिच ।
आपरो मन लक भय ला बाहिर खींच ।।

मन को उजाडों से मोठी शक्ति को पुंज।
यन शक्ति लक पार होहे यव पथ कुंज।।

चेताय गयी से मोला हिरदय की शक्ति।
भेटी से आता मोला असी मोठी भक्ति।।

दिसन लग्यो आता मोला बिसरो पथ ।
लक्ष्य परा परावन लग्यो मन को रथ ।।

जेन उजाडों ल मीन इत उत खोजयो ।
भेटयो वू मोला मोरो हिरदय मा बस्यो ।।

५.

प्रभु की भक्ति

तुम्ही आव मानव, मानवता को भाव ला भरो।
कर्म साजरो करो, फल की चिंता नोको करो।।

प्रभु परा राखो भरुषा, संताप मा नोको मरो।
आशीर्वाद से तुमला, कसो फसे तुमरो गरो।।

आपरो हिरदयमा, तुम्ही विश्वास ला असो भरो।
भक्ति लक प्रभु की, सूखो बाग़ बी होये हरो।।

ईर्ष्या का करो त्याग, मन दुखी कर नोको जरो।
प्रभू का आर्शीवाद लक, होय जाहो तुम्ही खरो।।

नोको करो कोनी अन्याय, प्रभु लक सदा डरो।
आपरो नित कर्म तुम्ही, धरम को अनुरूप करो।।

....

६.
मोरो बाल गनेशा

तोरी जय हो मोरो बाल गनेशा,
देजोस मोला येत्तो वरदान।
करम को पथ परा चल सकू,
बनावजो मोला असो धर्मवान।

दुनिया मा जासु सैर करन ला,
असो सपन दिस जासेत मोला।
रॉकेट होना जानलाई नवगृह,
धरकन संगमा मोला देवा तोला।

दुनिया का होयेत रोग ख़तम,
बनाय देहु मी असी मीठी दवा।
वैद्य बन तुमरी किरपा लक़,
कर देहु मी सबला सदा जवाँ।

ऊंच नींच ला करबीन् खतम,
ऊभो करनो से या नवी दुनिया।
सबला मिलहे मन का खिलौना,
नयी रोये इतन कोनी मुनिया।

सबला देव जीनुस सपन का,
बिनती सुन मोरी बाल गनेशा।
देवो प्रभु तुमही यव बरदान,
तुमरो लक से यव मोरी आशा।

७.छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार

क्षत्रिय धरम का पालन कर सेती।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!!

देवगड़ का राजा को आह्वान परा।
आयीन पंवार रामटेक श्रीराम धाम।।
नगरधन मा बांधकन येक किल्ला।
कहकन जय माँकाली जय श्रीराम।।
मोठी मुग़ल सेना परा विजयी भया।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!!

राजपुताना का गायकन शौर्यगान।
संग होतो हर हर महादेव का गान।।
कटक अना बंगाल की विजय मा।
मराठा शासनमा देयकन सहभाग।।
राखिन आपरो दोस्ती का सम्मान।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!१!

मालवांचल की माटी का वीर सपूत।
माय वैनगंगा को पावन आंचलमा।।
आपरी मेहनत खून पसीना लक।
समाज ला बनाया सेती खुशहाल।।
क्षत्रिय धरम का पालन कर सेती।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!२!

ठेयकन देवघर मा आपरी तलवार।
खेती बाड़ीमा उन्नत भया पंवार।।
बालाघाट गोंदिया सिवनी भंडारा।
येतरो मोठो भूभाग ला देईन संवार।।
धर्मका रक्षक कर्मठ अन दिलदार।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!३!

नवी सदी मानव उत्थान की आभा।
भयो शुरू समाज संगठना का दौर।।
आयी पंवार जाति सुधारणी सभा।
बैहर राम मंदिर का निर्माण भयो।।
क्षत्रिय धरम का पालन कर सेती।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!४!

आजाद देशमा नवो दिशा को संग।
चल पड़्या येको परा समाज जन।।
शिक्षा की ताकत कलम को संग।
खूब बढ़िन संगमा चल सबझन।।
असा आती उद्यमी अना परिश्रमी।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!५!

क्षत्रिय धरम का पालन कर सेती।
छत्तीस कुर का वीर क्षत्रिय पंवार!!

....

८.

कसो करबीन बडिमाय आता

नवो रंग मा रंगी से नवी पीढ़ी
जूनी पहिचान ला भुलाय रही से
कसो करबीन बडीमाय आता
नवो जमाना आय गयी से............

समाज का नेंग दस्तुर तीज तिव्हार
नवो रंग ढंग मा आय रही सेत
कसो करबीन बडिमाय आता
यव कसो नवो जमाना आयी से....

कम भयो मायबोली को मान
आता जित उत डगमगायो ईमान
कसो करबीन बडिमाय आता
जमाना असो काजक दिखाय रही से..

सुवारथ की भई आता मोठी गठरी
नही सुवाओ से आता ठेठरा मठरी
कसो करबीन बडिमाय आता
पोवारी संस्कार मुराय रही सेत......

....

९.
जूनी पीढ़ी अनानवी पीढ़ी

जूनी पीढ़ी का अनुभव अना
नवी पीढ़ी का नवो ज्ञान।
दुय पीढ़ी का समन्वय होय जाहे
त समाज बने महान।।१।।

जूनी पीढ़ी का बुजरुग गिनको
सबला राखनों पड़े मान।
उनको आशीर्वाद लक़
जित जाओ तुम्ही जहान ।।२।।

डोरामा उनको पिरम ही पिरम से
नही कोनी अभिमान।
सीख लक़ओनकी बनहे रस्ता
जर जाहे कटीलो रान।।३।।

ओनकी देखाई राह परा चलकन
मिट जाहे मन का अज्ञान।
नवी पीढ़ी लक पिरम येतरो की
देय देहेत आपरी जान ।।४।।

बसो उनको संग अना बाटो उनला
आपरो हिरदय का बान।
येतरोच मा वय दिसेती तुमला
सदा गावता ख़ुशी का गान।।५।।

बुजरुग ओढ़ील पुरखा आती
हर घर परिवार की शान।
हम तुम्ही सबको यव धरम की
देनला से उनला सम्मान ।।६।।

....

१०.
देश को उत्थान

सत्य की सदा विजय होसे,
असत्य को करबीन त्याग ।
जीवन को यन सन तिव्हारमा,
गावबिन पिरम को राग ।।१।।

नोको बिसरो कोनी,
आमी आजन सिरफ इंसान ।
पिरम अना धरम फैलायकन,
बाटन देव साजरो बान ।।२।।

साजरो धरकन कासरा,
बनबी नवो दौर का धुरखोरी।
जीवन को हर रंगमा रंगकन,
खेलबीन पिरम की होरी।।३।।

मोहतुर से नवजीवन को,
ऊभो होयकर करो सुवागत।
युवा पीढ़ीला से आव्हान,
रव्हनो पढ़े तुमला जागत।।४।।

मेहनत करबी आगे बढ़बीन
नही जसो कोल्हू को बईल।
सबको संगमा उत्थान लाई,
मिटाय बीन मन को मईल।।५।।

देश दुनिया मा मोठो होहे,
मोरो भारतवर्ष को सम्मान।
ऊभा होवो मोरा भाई बहिन,
करबी असो देश को उत्थान।।६।।

....

११.नवोउत्थान

चलो चलो मोरा प्रिय भाई बहिन,
समाजोत्थान की धरकन मशाल ।
होनकी से समाजमा नवी सकार,
क्षितिज आता होय रही से लाल ।।१।।

सबला मिलकन हाथ बढ़ावनों से,
देबी समाजला येक नवो आकार ।
नवी दिशामा नवोउत्थान करकन,
सबका सपन होयेती पुरा साकार ।।२।।

शिक्षालक़ होय जाये सबको उद्धार,
मन को डोरा लक़ करो सपाई ध्यान ।
बोहत जाहे सबआंग ज्ञान की धार,
नवो युग को साथी से ज्ञान विज्ञान ।।३।।

नवो जमाना का सेती नवा बिचार,
बिचार मा टाको संस्कारी उबटन ।
माय अजी अना गुरु का सुसंस्कार,
संस्कारी संग उन्नत सबको बचपन ।।४।।

उत्थान को भार धरकन डोईपरा,
हाथ मा हाथ सबजन थामकन ।
चलो बढ़बीन उन्नति को पथ परा,
सब आंग चोयेती सुखी समाजजन ।।५।।

१२.
मायबोली पोवारी

पोवारी से हमरी मायबोली ।
हमरी पहिचान आय पोवारी ।।

नहानागन को मान पोवारी ।
मोठागन को सम्मान पोवारी ।।

देवघर की आस्था से पोवारी ।
वाग्देवी को आशीर्वाद पोवारी ।।

घर घर की गोष्ठी मा पोवारी ।
माय को आशीर्वाद मा पोवारी ।।

बिया को हर गीत मा पोवारी ।
हर नेंग दस्तुरमा से पोवारी ।।

क्षत्रिय की वीरता मा पोवारी ।
नगरधनमा गूंजी होती पोवारी ।।

वैनगंगा को आंचल मा पोवारी ।
खेत खलियान मा गूंजी पोवारी ।।

पंवार पोवार की बोली पोवारी ।
जीवन को से संस्कार पोवारी ।।

युद्धभूमी की ललकार पोवारी ।
सबला साहस दिलावसे पोवारी ।।

बालाघाट गोंदिया मा पोवारी ।
भंडारा अना सिवनी मा पोवारी ।।

पोवारी से हमरी मायबोली ।
हमरी पहिचान आय पोवारी ।।

....

१३.
सफलता

प्रतिस्पर्धा को से ज़माना,
सेत आता अवसर कम।
काम धंधा नही मिल त,
होय जासे डोरा नम।।१।।

चलो आता यव आय,
ऊभो होन का बखत।
मेहनत लक़ बन जाहे,
जीवन रूपी सुन्दर तखत।।२।।

निवड़लेव आता तुम्ही,
आपरो पसंद का अवसर।
दौड़ाओं तन मन धनलक,
आपरो करम की खाशर।। ३।।

खुद परा विश्वास का बल,
रच देसे मोठो इतिहास।
देय देसे यव सबला,
साजरो करन का विश्वास।।४।।

मानुष त आय आपरो,
भाग्य का खुद विधाता।
करम लक़ भेट जासे,
सफलता को मोठो हाता।। ५।।

लक्ष्य को दिशा मा,
यदि होये सच्ची मेहनत
मिल जाहे विधार्थी ला,
सफल होन का रथ।। ६।।

....

१४.
मोवु

मोवु को होसे साजरो झाड़ हिवरो हिवरो ।
सुन्दर होव सेती येको फूल पिवरो पिवरो ।।

सकारी सिदोरी धर मोवू बेचनला जासेती ।
राखकन टोपली डोई मा मोवू घर आनसेती ।।

मोवू को हिवरो हिवरो सुन्दर साजरो पाना ।
बनावसेती वोकी पतरीअन पूजा को दोना ।।

टोरी अना मोवू बिककन मिल जासे नकद ।
गुणवान से मोवु को झाड़ करसे असो मदद ।।

जनावर लाई गुनकारी होसे मोवू को फूल ।
निसर्ग को भेट मोवू येला नोको जाओ भूल ।।

लगत काम मा आवसे टोरी गुल्ली को तेल ।
मोवू की सावली मा टुरु पोटू खेलसेती खेल ।।

कास्तकार को संगी से यव मोवू को झाड़ ।
देसे ठंढी सावली यव मोठो मोवू को झाड़।।

....

१५.
भारतदेश

रंग मा रंगी से मोरो प्यारो भारतदेश
पेहरकन सब इत सप्तरंगी गणवेश

कई संस्कृति को संगमा लगसे न्यारो
सबला मोरो भारत लगसे खूब प्यारो

प्रकृति ना येको स्वरूप ला संवारकन
देवरूप सजाईसे येला इत्आयकन

देवता इनकी जन्मभूमि से भारतवर्ष
इनको आशीर्वाद लक़ सबमा से हर्ष

भारत मा कन कन मा ईश्वर कोवास
धर्म परा से सप भारतीय को विश्वास

त्याग अन् वीरता की भूमि भारतवर्ष
तयार सब शीश चघावन लाई सहर्ष

सत्य अन धरम को मंघ से जीवन
सनातन ला निभाय कन् आजीवन

हर युग होता धरम् अन् ज्ञान मा दक्ष
भौतिकता नही इत् से मुक्तिका लक्ष

हर सन ला सब मिलकन मनाव सेजन
बंधुत्व सिखावन वाला आम्ही आजन

किरपा करो प्रभु सबमा रहें इत् हर्ष
हर युगमा महान रहें मोरो भारत वर्ष

....

१६.
क्षत्रिय पोवार/पंवार का कुर

परिहार तुरकर हरिनखड़े।
चौहान भैरम बिसेन बघेले।।

भगत शरणागत सोनवाने।
पुंड पारधी रनदीवा अम्बुले।।

क्षीरसागर गौतम फरीदाले।
येड़े हनवत डालिया कोल्हे।।

राजहंस रावत भोयेर कटरे।
ठाकरे रिनायत चौधरी पटले।।

बोपचे रनमत राणा सहारे।
जैतवार परिहार रहाँगडाले।।

....

१७. सनातन धरम

सनातन धरम की महिमा न्यारी,
सनातन धरम से सबले पुरातन।
सनातन धरम से सतत् शास्वत,
करनको से सबला येको जतन्।।१।।

पिरम एकता को भाव सनातन,
नीति अन् सत् सेत् पथप्रदर्शक।
संदेश इनको वसुधैव कुटुंबकम्,
साधना करो सब येकी भरसक।।२।।

पढ़ावसे मानवता धरम को पाठ,
सनातन धरम से असो संस्कारी।
सबला पिरम को सीख देयकन्,
धरा परा सनातनी सब नर नारी।।३।।

भागवत गीता मा देववाणी सुन,
धन्य भई से भारतवर्ष की माटी।
सबकी पूजा सिखावसे सनातन,
पूज्य सेत जंगल नदी गिर घाटी।।४।।

मानुष रूपमा आयकन भगवान,
युग युगमा करसे अधर्म का अंत।
लेसेत् भक्ति अना शक्ति का वर,
साधना कर तपस्वी साधु न् संत।।५।।

१८.
पोवारी

मायबोली से आम्हरी पोवारी
भाषा अना संस्कार पोवारी

छत्तीस कुर पंवार की भाषा
बड़े खूबच यव सबला आशा

जन्मभूमि मालवा की माटी
कर्मभूमि वैनगंगा की घाटी

आपरी भाषा का राखो मान
बढाव बीन सब येको सम्मान

सबझन बोलो पोवारी बिंदास
यव पोवार समाज लक़आश

माता तुल्य से आमरी पोवारी
ठेयो येको मान तुम्ही संस्कारी

पोवारी प्रचार को करो जतन्
मोरा सप्पा पोवार भाई बहन

....

१९. मोरो नाव मोरी पहिचान

मोठा करो छत्तीस कुर पंवार को मान,
नोको बिसरावो तुम्ही पोवारी सम्मान।
जरासो कमी मा भी होय जाये गुजारा,
आंच नोको आन देव ठेवो स्वाभिमान।

क्षत्रियता को पर्याय से पोवार को नाव,
फैलाओ पोवारी श्यान शहर अना गाव।
नोको रुकन देव सप् आता तुमरो पाव,
साजरी संस्कारी से हमरी पोवारी छाव।

पोवार समाज छत्तीस कुर का महासंघ,
पहिचान से कर्मठ अना उन्नति का रंग।
चल रहिसेत वैनगंगा की धारा को संग,
जीत कन् सब आपरो जीवन की जंग।

नवी पीढ़ी ला सांगनो से आपरो नाव,
गर्व लक़ सांगो आपरो कुर अना गाव।
धार लक आयिन छत्तीस कुर पोवार,
असो सांगत होतिनआम्हरा भाट राव।

बालाघाट की श्यान सिवनी की जान,
गोंदिया भंडारा की पहचान से पोवार।
वैनगंगा को आंचल मा उन्नत किसान,
असो ओरखो सेती छत्तीस कुर पंवार।

२०. क्षत्रिय धरम्

धरम की रक्षा, साजरो करम ।।
यवकरनो से, क्षत्रिय धरम् ....

आपरो देश की, रक्षा का सत्कर्म।।
यव से हमारो, क्षत्रिय धरम्..........

प्रकृति का भला, सबकोकरम्।।
मानवता मा से, क्षत्रिय धरम्......

अधर्म का नाश, यव से हुकम्।।
सत् का रक्षण, क्षत्रिय धरम्......

सप्परा दया, सबला पिरम् ।।
यव से हमारो, क्षत्रिय धरम्......

आय जासे ज़ब, पाप का चरम।।
अंत अन्याय को, क्षत्रिय धरम्.....

अनीति का अंत, भाव मा नरम ।।
क्षति लक़ रक्षा, क्षत्रिय धरम् ....

धरम का भाव, समझो मरम् ।।
त्याग अना सेवा ,क्षत्रिय धरम्......

२१. मी सांगूसु तुमला मोरी कहानी,

राजपुताना क़ी माटी लक़, जुड़ी से मोरी कहानी,
संग-संगमा रही से मोरी गति, वीर योद्धा इनकी जुबानी।
सांगूसु मी...

गुजराती, राजस्थानी, मालवी भाषा इनको बीचमा,
होतो मोरो बालपन, वीरता को बल क़ी सींचमा।
मी सांगूसु.....

नहानपन् का वैभव मोरो, मालवा का पंवार इनको
बीचमा,
मोरी गति चोटिल भई, विदेशी आक्रनता इनकी खींचमा।
मी सांगूसु...

चल पड़ी मी धर्मयोद्धा इनको संग, धर्म रक्षन क़ी राह
परा।
बुंदेलखंड वरी मध्य प्रांतमा आई, योद्धा इनकी तलवार
को नोक परा।।
मी सांगूसु....

कई राज्य क़ी माटी का रंगमा, सतरंगी भया मोरो अंग
अंग।
विदर्भमा नगरधन को रस्ता वरी पहुंची, वैनगंगा क्षेत्रमा
वीर पोवार इनको संग।।

मी सांगूसु.......

हर ऊजा योद्धा इननाआपरी वीरता लक़, रचीन नवो नवो
इतिहास।
वीरता क़ी जीत का इनाम, वैनगंगा क्षेत्र भया मोरो लाई
खास।।
मी सांगूसु....

मध्यप्रान्त क़ी भाषा इनको संग, भेटयों मोला मराठी
संस्कृति को रंग।
राजपुताना को वीर पंवार, उन्नत काश्तकार भया
छोड़कन आता जंग।।
मी सांगूसु.....

नवो रंग नवो रुपमा, आय गयी मीनवो स्वरूप मा।
सनातनी पोवारी संस्कृति का भाग भई, साहित्यिक नाव
पोवारी को रूप मा।।
मी सांगूसु....

माय गंगा को रूप वैनगंगा को आंचल मा से, मोला उन्नति
क़ी मोठी आशा।
विशेष स्वरूपमा मी आता सेंव, छत्तीस कुर पोवार क़ी
मातृभाषा।।
मी सांगूसु...

२२. क्षत्रिय पोवार/पंवार

छत्तीस कुर का सेती.
वीर क्षत्रिय सनातनी पंवार..
सियाराम को जयघोष को संग...
वैनगंगा को क्षेत्र ला देईन निखार....

राजपुताना का वैभव.
अना मध्य भारत क़ी शान..
हर ऊजा इनना साबुत राखीसेत...
आपरी गौरवशाली पोवारी पहिचान....

देवघर माठेयकन्.
अस्त्र शस्त्र अना निशान..
उन्नत काश्तकारी को संगमा...
हर क्षेत्रमा होय रही सेत् महान....

भाषा जिनकी पोवारी.
नामसे जिनको पोवार पंवार..
भंडारा गोंदिया लका बालाघाट...
अना सिवनी ज़िलामा सेती होनहार....

सप्कसेती हमला.
धारा नगरी का पोवार..
आदर्श से वीर विक्रमादित्य...
राजा भोज अना जगदेव पंवार....

कुलदेव से महादेव.
कुलदेवी से माय काली..
धरम इनको सनातनी हिन्दू...
सनातन क़ी से महिमा निराली...

२३. असत् परा सत् की जीत

असत् परा होसेसत् की सदा विजय।
कसो बिसरबी यव आय शाश्वत सत्।
सत् सनातनी अना असत्क्षन भंगूर।
मिट जाहे असत् अना बच जाये सत्।
युगोयुगो वरी जीवित रहें सनातन सत्।।

सत् को न कोनी से छोर न कोनी अंत।
असत जन्मयों त् तय से ओको अंत।
करदेहे येको नाश कोनी वीर सत्यवान।
देनवाला सप्पा असत् अधर्म का साथ।
प्रहार लक़ सत्यवान का होहे वय खात।।

असत् की तासीर सदा होसे नाशवान।
येको पालनकर्ता आती हैवान शैतान।
रहेती केतरोच मोठो केतरोच मजबूत।
लाठी से सत्त् की नही रहेती वय साबुत।
मिट जाहे असत्होहे ओको सर्वनाश।।

सत् को पथ आय बैकुंठधाम को पथ।
चलनो मा होवसे जरासो यव मुश्किल।
असत् दिस जाहे येको इंधारो कोनामा।
नोको आओ बात् मा असत् की कोनी।
सत् को पथमा नई होये कोनी अनहोनी।।

सत् की शक्ति मा से देव इनकी भक्ति।
कसो होय सिकसे असत् की आसक्ति।
असत् की मोठी कारी अधर्मी रात मा।
रस्ता दिखाए देहे सबला सत् का दिवो।
किरपा लक़ सबला मिलहे धर्म का मार्ग।।

इतिहास देसे गवाही सत की विजय को।
इतिहास मा असत् सदा भयी से ढ़ेर।
सत् को जापमा धुलाय जासेती पाप।
सत् का साथ से सदा धरम का साथ।
यन मार्गमा भेटसे सबला शक्तिका हाथ।।

जीवन कसोबी रहें परासत् को रहें संग।
सत जीतसे त काय लाई डरावसेव मंग।
असत् मा समायो मोहनी पाप की माया।
परा येकी नही रहव सदा साजरी काया।
सत् को संगमा असत होय जाहे अभंग।।

असत् का संगी आती छल अना धोका।
असत् की छाव मा रवहसेती पापी लोखा।
दुःख मा या सुःखमा देनो से सत् को संग।
भर देव सबको हिरदयमा भक्तिको रंग।
सत् की महिमा मा जीत जासेती सप् जंग।।

२४.
छत्तीस कुर का आमी पोवार

छत्तीस क्षत्रिय कुल रूपी पुष्प का।
यक पुष्पगुच्छ आय पोवार समाज।।
पुरखा जिनका होता योद्धा महान।
करीसेत जिनना भारतवर्ष मा राज।।

छत्तीस कुर का आजन आमी पोवार।
हमला कसेती धारा नगरी का पंवार।
आजन वैभवशाली अतीत का वारिस।
सर्वगुन सम्पन्न से छत्तीस कुर परिवार।।

हामी सेजन क्षत्रिय पंवार पोवार ।
पोवारी संस्कृति हाम्रो स्वाभिमान।।
पोवारी संस्कार लाई मर जाबीन ।
नही बिक़बीन हाम्रो धरम ईमान।।

जागों उठो वीर क्षत्रिय पंवार पोवार !
धरकन हाथ मा एकता की मशाल !!
कसो मुराये आपली पुश्तेनी पहिचान !
मोठी से हामरी पोवारी संस्कारी ढाल !!

....

२५.
बालमन

बालक का हिरदय।
पावन सच्चो से मन।।
सपन की से दुनिया।
खोयी गई से मुनिया।।

मोबाईल मा से मन।
गेम मा से उलझन।।
कोडिंग भयी से शास्त्र।
तकनीक से ब्रह्मास्त्र।।

फाफा फ़ीफ़ली का खेल।
ऑनलाइन मा मेल।।
मिट्ठू को हिवरो रंग।
देख मन भयो दंग।।

अंग्रेजी मा से पढ़ाई।
नंबर की से लड़ाई।।
खेलकूद का इनाम।
संगीत कक्षा का गान।।

रिमोट की मोठी कार।
मिलन का से आसार।।
सॉफ्टवेयर मोबाइल।
भयी से गाड़ो का खेल।।

जन्मदिवस का केक।
भेंट येक लक़ येक।।
संगी इनकी शुभेच्छा।
आशीर्वाद अना दीक्षा।।

करो आर्ट अना क्राफ्ट।
बनावन का से ड्राफ्ट।।
दिवस भर से शाला।
घरमा लगी से ताला।।

श्याम ला से ट्यूशन।
रात मा से गृहकार्य।।
आय गयी से दीवारी।
कसी होये तययारी।।

मोठो टाइम टेबल।
देवा सबला दे बल।।
माय अजी का सपन।
कित गयो बालपन।।

....

२६.क्षत्रिय पोवार

भाग्य वाला सेत् वीर पोवार,
जिनको आपरो इतिहास से।
जिनकी कई वीरता की गाथा,
हिरदयमा सनातनी वास से।।१।।

खून मा तोरो लगत उबाल से,
जवर तोरो वीरता की ढाल से।
क्षत्रियता को प्रहार लक़ तोरो,
अधर्मी इनको हाल बेहाल से।।२।।

रणभूमि मा विजेता पोवार,
धर्मयुद्ध मा भेटे विजयगति।
मंघा नही रव्हन् वाला कभी,
चाहे मिलहे इनला वीरगति।।३।।

क्षति लक़ करसेती सदा रक्षा,
नाव से जिनको क्षत्रिय पोवार।
वीरता लक इतिहास रचिसेत,
भोज अन् विक्रमादित्य पंवार।।४।।

लेयकन धरम रक्षन् की कसम,
क्षत्रियता को संस्कार धरकन्।
खुशहाली का लहरायेती झंडा,
सबको दुःख संताप ला हरकन्।।५।।

....

२७.
रणभेरी

समाजोत्थान को दीवा ।
सबला पेटावनों चाहिसे।।

उठो मोरो युवा साथी ।
आलस की मनाही से ।।

बज गयी से रणभेरी ।
समाज को उत्थान की ।।

लिखबीन गौरवगाथा ।
समाज नवनिर्मान की ।।

युवा हिरदयमा बसी गयी से।
समाजोत्थान को मोठो बिचार।।

कदम लक कदम मिलायकन।
कर रही सेत संस्कारी आचार।।

....

२८.

मन की महिमा

मन की महिमा से अपरम्पार,
गति अन शक्ति से येकी अपार।
राखबी सब मन मा निर्मलता,
जीवन पथमा मिल्हे सफलता ।।१।।

मनमा राखो सब यव आशा,
पुरी होहे हर अभिलाषा।
बस मा रहे ज़बआमरो मन,
सफल होय जाहे यव जीवन।।२।।

मन विचार को मोठो गंगार,
शरीर करसे येको श्रंगार।
सागर की लहर जसो से मन,
चलावसे यव हमरो जीवन।।३।।

मनमा से सतरंगी बिचार,
देवसे मानव ला आचार।
मनकी गती होवसे अथाह,
धरो थांबकन च येकी राह।।४।।

नियममा राखो मन की शक्ति,
करखन सब भगवान की भक्ति।
भेट सिकसे गलत लक़ मुक्ति,
मानकन सबझन यवच युक्ति।।५।।

२९.

नवोबरस

नवोबरस को आगमन को करो स्वागत,
नवो लक़ होसे नवी ऊर्जा की आगत।

नवोपन लक़ होसे ख़ुशी को अहसास,
नवो कर देसे सबको जीवन ला खाश।

प्रसन्नता लक़ हिरदयमा सृजन को वास,
सृजनता आनसे नवयुग यव से विश्वास।

अतीत को पदचिन्ह परा नवी पहिचान,
होहे आलोकित भविष्य अना वर्तमान।

गाबीन सब नववर्ष परा सुवागत को गान,
आन्हे यव सबको जीवनमा मधुर मुस्कान।

ख़ुशी अना मधुरता की नहाय कोनी लागत,
आवो मिलकन करबी नववर्ष को सुवागत।

....

३०.राजकुमार

काय लाई रूठ गयो,
मोरो यव राजकुमार।
जरासो मुस्कराय दे,
करबीन तोला दुलार।।

कोयर की कुहू कुहू,
सुनकन हासी आई।
मोरो राजकुवर को,
मन ला लगित भाई।।

बंदरा कूद रही सेती,
कर रही सेत हूप हूप।
देखकन ख़ुशी भई,
निखरयो वोको रूप।।

सुन चिड़िया की चहक,
मन मा आनंद आयो।
पक्षी जसो उड़न लाई,
मन वोको ललचायो।।

नहान सो मन मा,
सेती मोठासपन।
कसो रस्ता रोके,
दुफारी की तपन।।

प्रकृति को कोरा मा,
सेती ख़ुशी का उपहार।
खुश भयो राजकुमार,
लेयकन मोठो दुलार।।

३१.
समाजोत्थान

देदीप्यमान होय जाए हमरो समाज।
होहे धान धनशी लक सम्पूर्ण समाज।
यव से मोरी आस्था अना पुरो विश्वास।
बने खुशहाल अना सुसंस्कृत समाज।।

युवा मन को निश्चय की ताकत संगमा।
बिचार पक्को से करबी समाजोत्थान।
देजो माय वाग्देवी हमला यव वरदान।
समाज को होयजाहे हरऊजा उत्थान।।

करबीन सदा आपरो समाज की बात।
उत्थान लाई देव सबझन आपरो हाथ।
करबीन आपरी मूल संस्कृति की बात।
आपरी पहिचान लक़ होहे मुलाक़ात।।

पक्को निश्चय की ताकत को संगमा।
बिचार पक्को से करबी समाजोत्थान।
देजोमाय वाग्देवी हमला यव वरदान।
समाज को होयजाहे हर ऊजा उत्थान।।

....

३२. क्षत्रिय पोवार पंवार

दुश्मन को सहकन कई वार प्रहार।
मन माहोतो उनको खुन्नस हजार।।
आह्वान भयो ऊभो होन को सबला।
करन ला आपरो धरम को उद्धार।।

धरकन दुही धार की मोठी तलवार।
कर देईन पापी हिन को संहार।।
असो आती हमरो पुरखा महान।
गर्व लका कहो आमी क्षत्रिय पंवार।।

सनातनी संस्कृति मोरी संस्कृति ।
हिंदी मा कसेति मोला पंवार ।।
पोवारी मा मोरो नाव से पोवार ।
छत्तीस कुर को से मोरो समाज ।।

वैनगंगा को आंचल मा आयकन पंवार।
मेहनत लका देईन यन क्षेत्र ला संवार।।
मुरन नयी देईन आपरी क्षत्रिय पहिचान।
गर्व से आमी आजन क्षत्रिय पोवार पंवार।।

....

३३.सही को रस्ता

जीवन को इंधारो मा ।
रस्ता दिखावसे वू मोला ।।
तोरो दर्शन की आस मा ।
सुमरुसू मी सदा तोला ।।

प्रभु आवजो तू आवजो ।
प्रभु घरमा मोरो आवजो ।।
आयकन तू मोरो घर मा ।
सही को रास्ता दिखावजो ।।

तर्क अना गियान को होहे संगम।
त मन मा आहेति साजरो बिचार।।
बिचारी मानुष को करखन संगत।
दिसे पुरो समाज जन मा सदाचार।।

पुरखा गिन की मोठी से प्रेरणा।
प्रेरणा देसे गुरु को जसो ज्ञान।।
ज्ञान बन जासे पथ को प्रदर्शक।
मिट जासे पुरो जीवन को अज्ञान।।

....

३४.
दसरा

श्रीराम ना करिन रावन को वध ।
पापियों संग भयो पाप को अंत ।।
दसरा सन देसे सबला यव सीख ।
धरम अना सच की महिमा अनंत ।।

रावन ल मारकन सोना पत्ती देयकन ।
क्षत्रिय पंवार कर सेती देवघर मा पूजा।।
होसेमयरी बड़ी अना सस्त्र को पूजन।
पोवारी मा दिससे यव दस्तूर हरऊजा।।

....

३५. लक्ष्य

करनो से मोला मोठो काम।
आता करनो नहाय आराम।।

माता पिता का सेती सपन।
लगाय देन को से तन मन।।

सबला मोरो लक मोठी आस।
आय सुफल होनको बिश्वास।।

करनो से आता काम महान।
मोला नोको समझो नहान।।

ऊभो होओ चलनो से आबा।
शक्ति देहेति महाकाल बाबा।।

रस्ता मा आहेती कई बाधा।
देहेती बल दादी अना दादा।।

हिटहे हर मुश्किल को हल।
करम लक मिल जाहे फल।।

राखो भरुषा होनको सफल।
लक्ष्य भेटे अज नही त् कल।।

३६.
पोवारी चारोली

माय वैनगंगा

माय गंगा को रूप आय वैनगंगा।
जेको आंचल मा बसी सेत पोवार।।
वैनगंगा मैया को आशीर्वाद लक़।
उन्नत किसान भया क्षत्रिय पंवार।।

=========

सिहारपाठ

बैहर नगर क़ी पावन माटी परा।
दिससे आपरी पँवारी को ठाठ।।
समाज को मोठो तीर्थ बन गयो।
सतपुड़ा को पहाड़ सिहारपाठ।।

=========

पोवारी साहित्यकार

पोवारी अस्मिता को रक्षण साती।
जुटी सेत पोवारी का साहित्यकार।।
सोवतो समाज ला जगावन लाई।
ओनकी कलम से आता हतियार।।

....

पोवारी संस्कृति

मानसेती सदा क्षत्रियता को संस्कार।
भारतभूमि का रक्षन करसेती पोवार।।

धारारानगरी का छत्तीस कुर पंवार।
वैनगंगा क्षेत्रमा भी आनी सेत बहार।।

आतातरी से तलवार मा येतरी धार।
दुष्ट पापी इनको कर देहे सीना पार।।

सनातनी धरम का सेती ध्वजधारक।
कसेती पंवार ला धरा को दुखहारक।।

पोवारी संस्कृति को करबीन जतन।
येको रक्षन लाई देय देबीन तन मन।।

छत्तीस कुरया पोवार इनकी धरोहर।
सदा येला साबुत राखन देव हरिहर।।